दिल्ली लौटते समय लू लगने से 1489 ई० में उसकी (Bahalola Lody) मृत्यु हो गई। बहलोल ने 38 वर्ष से अधिक शासन किया जो किसी भी सुल्तान से अधिक था।

सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई०):

बहलोल की मृत्यु के बाद उसका द्वितीय पुत्र निजाम शाह, सुल्तान 'सिकन्दर लोदी' की उपाधि के साथ जलाली में सुल्तान घोषित किया गया। वह गुजरात के महमूद बेगड़ा तथा मेवाड़ के राणा सांगा का समकालीन था।

सिकन्दर लोदी ने अपने प्रतिद्वंदी आलम खाँ लोदी, ईसा खाँ लोदी बारबक शाह के विरुद्ध अभियान कर उन्हें पराजित किया। इसके बाद सिकंदर ने जौनपुर के राज्यपाल तातार खाँ लोदी तथा बयाना के सुल्तान अशरफ को पराजित किया। 1491 ई० में बयाना दिल्ली सल्तनत में शामील कर लिया गया। 1492 ई० में उसने जौनपुर के गवर्नर बारबक को हटाकर वहाँ प्रत्यक्ष शासन स्थापित किया। उसने बंगाल के सुल्तान हुसैन शाह के विरुद्ध सैनिक कारवाई की। 1495 ई० में बंगाल के सुल्तान के साथ सिकंदर ने संधि कर ली जिसके अनुसार दोनों एक-दूसरे के राज्य का अधिक विस्तार रूप में अतिक्रमण न करने को राजी हो गये।

उसने Bihar में दरिया खाँ को नियुक्त किया तथा तिरहुत के राजा को कर देने के लिए विवश किया।

सिकन्दर ने ग्वालियर के राजा मानसिंह से नजराना प्राप्त किया तथा धौलपुर के शासक विनायक देव को पराजित किया। 1504 ई० में उसने मंढ़ाकल पर अधिकार कर लिया। 1509 ई० में उसने अवेतपुर और नरवर (Narwar) पर भी अधिकार कर लिया। 1506 ई० में उसने आगरा नगर का निर्माण किया और राजधानी वहाँ स्थानांतरित कर दी जिससे पूर्वी राजस्थान के क्षेत्रों तथा व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण रखा जा सके। 21

Continue...

नवम्बर 1517 ई० को आगरा में सुल्तान की मृत्यु हो गई।

सिकंदर ने गुप्तचर विभाग का पुनर्गठन किया तथा शासक की शक्ति को बढ़ाया। उसने लगान व्यवस्था में भी सुधार किया। उसने लगान संबंधी आंकड़े इकट्ठा करवाये जिनके आधार पर लगान की वसूली निर्धारित की गई। भूमि की माप के लिए 'सिकन्दरी गज' का प्रयोग प्रारंभ कराया। उसने विधवाओं को आर्थिक अनुदान दिये तथा मुफ़्त भोजन की व्यवस्था की। वह स्वयं 'गुलरुखी' के उपनाम से कविताएं लिखा करता था। उसने अनाज से जकात समाप्त कर दिया।

Continue .....

— Dr. Madan Paswan, Dept. of History,
Assit. Professor, D. B. College, Madhubani
Jaynagar.